नं. 1

संजीव® बुक्स

हिन्दी-X

(कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2025 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित

2026

संजीव प्रकाशन,

जयपुर

मूल्य : ₹ 280/-

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी–कक्षा 10

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र होगा जिसकी परीक्षा योजना निम्नानुसार है–

प्रश्न-पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचना	14
व्यावहारिक-व्याकरण	10
पाठ्यपुस्तक : क्षितिज-भाग 2	33
पूरक-पुस्तक : कृतिका-भाग 2	11

1. अपठित बोध : **12**

(i) अपठित गद्यांश (3 बहुचयनात्मक, 3 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) (6 प्रश्न × 1 अंक) = 6

(ii) अपठित पद्यांश (3 बहुचयनात्मक, 3 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) (6 प्रश्न × 1 अंक) = 6

2. रचना : **14**

(i) संकेत-बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर निबंध-लेखन (विकल्प सहित) लगभग 300 शब्दों में 6

(ii) पत्र-लेखन (औपचारिक/अनौपचारिक पत्र) (विकल्प सहित) 4

(iii) संक्षिप्तीकरण एवं पल्लवन (विकल्प सहित) 4

3. व्यावहारिक-व्याकरण : **10**

(2 बहुचयनात्मक, 6 रिक्त स्थान पूर्ति के प्रश्न एवं 1 लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) पद भेद-संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय 4

(ii) उपसर्ग एवं प्रत्यय 2

(iii) संधि और समास 2

(iv) मुहावरे और लोकोक्तियाँ पाठ्यपुस्तक के आधार पर 2

4. पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पुस्तक :

पाठ्यपुस्तक : क्षितिज **33**

(i) किन्हीं दो पठित गद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी तीन प्रश्न 3

(ii) किन्हीं दो पठित पद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी तीन प्रश्न 3

(iii) 2 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (1 गद्य एवं 1 पद्य भाग से विकल्प सहित)
(60–80 शब्द) 2 प्रश्न × 3 अंक = 6

(iv) 6 लघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) (40 शब्द) 6 प्रश्न × 2 अंक = 12

(v) 6 बहुचयनात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) 6 प्रश्न × 1 अंक = 6

(vi) किन्हीं एक रचनाकार का परिचय (कवि अथवा लेखक के विकल्प में)
(60–80 शब्द) 1 प्रश्न × 3 अंक = 3

पूरक-पुस्तक : कृतिका **11**

(i) एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (60–80 शब्द) 1 प्रश्न × 3 अंक = 3

(ii) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न (40 शब्द) 2 प्रश्न × 2 अंक = 4

(iii) 4 बहुचयनात्मक प्रश्न 4 प्रश्न × 1 अंक = 4

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें :

1. **क्षितिज–भाग 2**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **कृतिका–भाग 2**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट–विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-2

काव्य-खण्ड

1.	सूरदास	1-12
2.	तुलसीदास	12-25
3.	जयशंकर प्रसाद	25-35
4.	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	35-43
5.	नागार्जुन	44-55
6.	मंगलेश डबराल	55-64

गद्य-खण्ड

7.	नेताजी का चश्मा	स्वयं प्रकाश	65-78
8.	बालगोबिन भगत	रामवृक्ष बेनीपुरी	78-89
9.	लखनवी अंदाज	यशपाल	90-98
10.	एक कहानी यह भी	मन्नू भण्डारी	98-111
11.	नौबतखाने में इबादत	यतीन्द्र मिश्र	111-124
12.	संस्कृति	भदंत आनन्द कौसल्यायन	124-132

कृतिका भाग-2

1.	माता का अँचल	शिवपूजन सहाय	133-143
2.	साना साना हाथ जोड़ि.........	मधु कांकरिया	143-154
3.	मैं क्यों लिखता हूँ?	अज्ञेय	154-161

व्यावहारिक व्याकरण

1.	पद-भेद-संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय	162-187
2.	उपसर्ग	187-195
3.	प्रत्यय	195-203
4.	सन्धि	203-211
5.	समास	211-216
6.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	216-238

रचना

1. निबन्ध-लेखन

1. साइबर अपराध के बढ़ते कदम
अथवा
सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध 239
2. कृत्रिम बुद्धिमता वरदान या अभिशाप
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है 240
3. मेक इन इंडिया
अथवा
स्वदेशी उद्योग 241
4. आत्मनिर्भर भारत 242
5. भारत में कोरोना महामारी प्रबन्धन
अथवा
वैश्विक महामारी कोरोना 242
6. भारतीय नारी तब और अब
अथवा
राष्ट्रीय विकास में नारी की भागीदारी 243
7. राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान 244
8. बढ़ते हुए फैशन का दुष्प्रभाव
अथवा
फैशन की व्यापकता और उसका दुष्प्रभाव 245
9. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
अथवा
प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 245
10. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या
अथवा
कन्या भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 246
11. आतंकवाद : एक विश्व समस्या
अथवा
आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 247
12. रोजगार गारंटी योजना : मनरेगा
अथवा
गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 248
13. राजस्थान में गहराता जल संकट
अथवा
राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 249

14. बाल विवाह : एक अभिशाप 249
15. आतंकवाद : एक समस्या
अथवा
आतंकवाद : भारत की विकट समस्या 250
16. दहेज–प्रथा
अथवा
समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 251
17. वैश्विक महँगाई
अथवा
मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या
अथवा
बढ़ती महँगाई : एक विकराल समस्या 251
18. पर्यावरण प्रदूषण
अथवा
पर्यावरण प्रदूषण : कारण और निवारण 252
19. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या
अथवा
भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य 253
20. बढ़ते वाहन : घटता जीवन–धन
अथवा
वाहन–वृद्धि से स्वास्थ्य–हानि 253
21. युवा वर्ग में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति
अथवा
नशाखोरी : एक सामाजिक अभिशाप 254
22. बेरोजगारी की समस्या और समाधान
अथवा
रोजगार के घटते साधन 255
23. नारी सशक्तीकरण 256
24. मातृभाषा और उसका महत्त्व 256
25. सर्व शिक्षा अभियान
अथवा
जीवन में शिक्षा का महत्त्व 257
26. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 258
27. शिक्षित नारी : सुख समृद्धिकारी
अथवा
नारी–शिक्षा का महत्त्व 259

28. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व

अथवा

कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता 259

29. निरक्षरता : एक अभिशाप 260

30. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता

अथवा

नैतिक शिक्षा की महत्ती आवश्यकता 261

31. सैनिक शिक्षा की आवश्यकता 262

32. इन्टरनेट की उपयोगिता

अथवा

विद्यार्थी जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 262

33. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप

अथवा

मोबाइल फोन : छात्र के लिए वरदान या अभिशाप 263

34. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी

अथवा

सूचना क्रांति के युग में भारत 264

35. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव

अथवा

कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 265

36. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप

अथवा

युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव 265

37. मानव के लिए विज्ञान-वरदान या अभिशाप

अथवा

विज्ञान के बढ़ते कदम 266

38. समय का सदुपयोग 267

39. जल संरक्षण : हमारा दायित्व

अथवा

जल है तो जीवन है 267

40. अनुशासन का महत्त्व

अथवा

विद्यार्थी एवं अनुशासन 268

41. विद्यार्थी जीवन : भावी जीवन का आधार 269

42. वर्तमान की महत्ती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता

अथवा
राष्ट्रीय एकता
अथवा
राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 269
43. समाज–निर्माण में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका
अथवा
समाचार–पत्रों का महत्त्व 270
44. कटते जंगल : घटता मंगल 271
45. राजस्थान के मेले 271
46. भारत में षड् ऋतुओं का प्रभाव 272
47. ऋतुराज वसन्त
अथवा
प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त 272
48. त्योहारों का महत्त्व
अथवा
त्योहार : जनमंगल के आधार 273
49. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव
अथवा
राजस्थान के त्योहार 274
50. स्वास्थ्य ही श्रेष्ठ धन है
अथवा
स्वस्थ जीवन सुख का आधार 274
51. भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की चुनौती 275
52. स्वच्छ भारत अभियान
अथवा
राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान 276
53. खुला–शौचमुक्त अभियान 276
54. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
अथवा
योग भगाए रोग 277
55. शिक्षा के क्षेत्र में मोबाइल की उपयोगिता 278
56. शिक्षा में खेलकूद का महत्त्व
अथवा
जीवन में खेलों का महत्त्व 279
57. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता 279

58. राजस्थान के लोकगीत 280
59. राजस्थान की ऐतिहासिक धरोहर 280
60. नखरालो राजस्थान 281
61. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना
अथवा
जीवन की वह चिरस्मरणीय घटना 281
62. गुरुजी जिन्हें मैं भुला नहीं सकता
अथवा
मेरे आदरणीय गुरुजी 282
63. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा
अथवा
किसी रोचक यात्रा का वर्णन 283
64. चुनाव का एक दृश्य
अथवा
चुनाव की हलचल 283
65. मेरा प्रिय नेता (युग पुरुष महात्मा गाँधी) 284
66. मेरा प्रिय कवि
अथवा
मेरा प्रिय साहित्यकार : गोस्वामी तुलसीदास 285
67. मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरितमानस 285
68. स्वतंत्रता के 70 वर्ष–क्या खोया, क्या पाया? 286
69. इक्कीसवीं सदी का भारत
अथवा
मेरे सपनों का भारत 286
70. मुझे गर्व मेरे भारत पर
अथवा
मेरा भारत महान् 287
71. यदि मैं प्रधानमंत्री होता
अथवा
यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता 288
72. यदि मैं प्रधानाचार्य होता 288
73. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक
अथवा
पर्यावरण संरक्षण के उपाय 289

74. बढ़ता ध्वनि प्रदूषण 290

75. उपभोक्ता और भारतीय संस्कृति

अथवा

उपभोक्ता संस्कृति का बढ़ा कुप्रभाव 290

76. यातायात सुरक्षा

अथवा

सड़क सुरक्षा : जीवन सुरक्षा 291

77. मनोरंजन के आधुनिक साधन 292

78. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण

अथवा

पर्यावरण संरक्षण : हमारा दायित्व 292

79. युवा वर्ग में असन्तोष–कारण और निवारण 293

80. आदर्श विद्यार्थी 293

81. वर्तमान समस्याएँ एवं निराकरण में युवाओं का योगदान

अथवा

सामाजिक विकास में युवाओं का सहकार 294

82. इलेक्ट्रिक वाहन : आज की आवश्यकता 294

83. सोशल मीडिया का बढ़ता प्रयोग एवं उसका प्रभाव 295

2. पत्र-लेखन (औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) 296–326

3. संक्षिप्तीकरण (सार लेखन) एवं पल्लवन (विस्तार लेखन) 327–344

अपठित बोध

(i) अपठित गद्यांश 345–361

(ii) अपठित पद्यांश 362–376

माध्यमिक परीक्षा, 2025

हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : $12 \times 1 = 12$

(i) कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं? 1
(अ) दो (ब) तीन (स) चार (द) एक

(ii) निम्नांकित में से सर्वनाम है— 1
(अ) वह (ब) क्रिया (स) ताल (द) गति

(iii) अमीरुद्दीन का जन्म हुआ था— 1
(अ) बंगाल में (ब) पटना में
(स) डुमराँव में (द) भोपाल में

(iv) बालगोबिन भगत 'साहब' किसे मानते थे? 1
(अ) स्वयं को (ब) कबीर को (स) अपने पुत्र को (द) अपनी पतोहू को

(v) 'नेताजी का चश्मा' पाठ की विधा है— 1
(अ) कहानी (ब) कविता (स) नाटक (द) उपन्यास

(vi) 'एक कहानी यह भी' के लेखक का नाम है— 1
(अ) मुंशी प्रेमचंद (ब) हरिवंश राय बच्चन (स) गोपालदास 'नीरज' (द) मन्नू भण्डारी

(vii) परशुराम आपे से बाहर क्यों हो गए? 1
(अ) शिव-धनुष को खंडित देखकर (ब) अकारण ही
(स) राम के मोहक रूप को देखकर (द) राजा जनक को देखकर

(viii) 'उत्साह' कविता में कवि ने संबोधित किया है— 1
(अ) सूर्य को (ब) पथिक को (स) बादल को (द) स्वयं को

(ix) सूरदास के काव्य में किस भाषा का निखरा हुआ रूप है? 1
(अ) ब्रजभाषा (ब) संस्कृत (स) अवधी (द) प्राकृत

(x) 'मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी'
उपर्युक्त पंक्तियों में अपनी कहानी कौन कह रहा है? 1
(अ) भँवरा (ब) चिड़िया (स) तुलसीदास (द) पुष्प

(xi) 'भोलानाथ' का असली नाम क्या था? 1
(अ) कन्हैया (ब) तारकेश्वरनाथ (स) बम-भोला (द) राम

(xii) ''मैं क्यों लिखता हूँ'' पाठ के लेखक का नाम है— 1
(अ) प्रसाद (ब) निराला (स) पंत (द) अज्ञेय

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : $6 \times 1 = 6$

(i) स्वर सन्धि .... प्रकार की होती है। 1

(ii) 'यथाशक्ति' शब्द में .... समास है। 1

(iii) 'विदेश' शब्द में .... उपसर्ग है। 1

(iv) वे विशेषण, जो किसी पदार्थ की निश्चित या अनिश्चित मात्रा, परिमाण, नाप या तौल आदि को बोध कराते हैं, उन्हें .... विशेषण कहते हैं। 1

(v) किसी भाव, अवस्था, गुण अथवा दशा के नाम को .... संज्ञा कहते हैं। 1

(vi) 'पालनहार' शब्द में .... प्रत्यय है। 1

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : $6 \times 1 = 6$

ऋतु के अनुसार ही त्योहारों का समावेश किया गया है। भारत में हर दो महीने बाद ऋतु परिवर्तन होता है। वसन्त के त्योहार में उद्यान और उपवनों में वृक्ष, लता और गुल्मों को देखकर किसका मन मयूर नहीं नाच उठेगा। पीले सरसों के फूल तथा लाल टेसू के फूलों की छटा किसे आकृष्ट नहीं करेगी। वर्षा ऋतु भी कम मन-मोहक नहीं होती। वर्षा ऋतु में तीज, नागपंचमी और रक्षाबंधन के त्योहार खूब धूम-धाम से मनाए जाते हैं। वर्षा की रिमझिम में तीज का त्योहार नारी मन को उद्वेलित किए बिना नहीं रहता। वे सुख-सौभाग्य की कामना करते हुए यह त्योहार मनाती हैं। रक्षाबंधन भाई-बहिन के अटूट प्रेम का प्रतीक है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

(ii) भारत में ऋतु परिवर्तन कब होता है? 1

(iii) वर्षा ऋतु में कौन-कौनसे त्योहार आते हैं? 1

(iv) रक्षाबंधन का त्योहार किसका प्रतीक है? 1

(v) तीज का त्योहार क्यों मनाया जाता है? 1

(vi) 'दुर्भाग्य' शब्द का विपरीतार्थक शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। 1

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : $6 \times 1 = 6$

तोड़ो तोड़ो तोड़ो
ये पत्थर ये चट्टानें
ये झूठे बंधन टूटें
तो धरती को हम जानें
<u>सुनते हैं मिट्टी में रस है जिससे उगती दूब है</u>
<u>अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है</u>
आधे-आधे गाने

(i) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

(ii) कवि क्या तोड़ने की बात कर रहा है? 1

(iii) कवि पत्थर और चट्टानें तोड़ने की बात क्यों कहता है? 1

(iv) अपने मन के मैदानों पर क्या व्याप्त है? 1

(v) धरती को हम कब जानेंगे? 1

(vi) रेखांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

खण्ड-ब

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : $7 \times 2 = 14$

5. ''काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एक अद्‌भुत परंपरा है।''-यह परंपरा कौन-सी है? 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

6. मन्नू भंडारी ने अपनी माँ को धरती से ज्यादा धैर्यवान और सहनशील क्यों कहा है? 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर समझाइए। 2

7. 'संगतकार' कविता की मूल संवेदना लिखिए। 2

8. 'उत्साह' कविता में निराला ने बादल को किसका प्रतीक बताया है? 2

9. भोलानाथ को खाना खिलाने के लिए मइयाँ क्या-क्या उपक्रम करती थी? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर बताइए। 2

10. अज्ञेय के अनुसार अनुभव और अनुभूति में क्या अंतर है? 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आधार पर समझाइए। 2

11. 'श्री गणेश करना' मुहावरे का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए। 2

खण्ड-स

12. निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : $4 \times 1 = 4$

अब हालदार साहब को बात कुछ-कुछ समझ में आई। एक चश्मेवाला है जिसका नाम कैप्टन है। उसे नेताजी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है। बल्कि आहत करती है, मानो चश्मे के बगैर नेताजी को असुविधा हो रही हो। इसलिए वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है। लेकिन जब कोई ग्राहक आता है और उसे वैसे ही फ्रेम की दरकार होती है जैसा मूर्ति पर लगा है तो कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर लगा फ्रेम संभवत: नेताजी से क्षमा माँगते हुए-लाकर ग्राहक को दे देता है और बाद में नेताजी को दूसरा फ्रेम लौटा देता है।

(i) चश्मेवाले का क्या नाम था? 1
(ii) चश्मेवाले को क्या चीज बुरी लगती थी? 1
(iii) नेताजी की असुविधा को कैप्टन ने किस प्रकार दूर किया? 1
(iv) चश्मेवाला मूर्ति पर लगा फ्रेम क्यों उतार लेता था? 1

अथवा

जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान है जिनसे न्यूटन शायद अपरिचित ही रहा।

(i) वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कौन है? 1
(ii) संस्कृत व्यक्ति की संतान क्या नहीं कहला सकती? 1
(iii) न्यूटन ने किसका आविष्कार किया था? 1
(iv) भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी किससे परिचित है? 1

13. प्रस्तुत पठित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : $4 \times 1 = 4$

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु कह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ का नाम लिखिए। 1
(ii) सेवक का कार्य क्या है? 1
(iii) शिवधनुष तोड़ने वाले को परशुराम ने किसके समान बताया है? 1
(iv) राम ने परशुराम को अपना परिचय क्या कहकर दिया? 1

अथवा

उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

(i) प्रस्तुत पंक्तियों की कविता का नाम लिखिए। 1
(ii) कवि क्या गाने में असमर्थ है? 1
(iii) कवि क्यों जाग गया? 1
(iv) कवि को क्या नहीं मिला? 1

14. बालगोबिन भगत की मृत्यु कैसे हुई? - पाठ के आधार पर समझाइए। 3
(उत्तर सीमा लगभग 50-60 शब्द)

अथवा

लेखक के सैकंड क्लास के डिब्बे में चढ़ने पर, पहले से वहाँ बैठे नवाब साहब पर क्या प्रतिक्रिया हुई? 'लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर समझाइये। (उत्तर सीमा लगभग 50-60 शब्द) 3

15. 'हमारैं हरि हारिल की लकरी।'
गोपियों ने हरि को 'हारिल की लकरी' क्यों कहा है? पाठ के आधार पर समझाइए। 3
(उत्तर सीमा लगभग 50-60 शब्द)

अथवा

'दंतुरित मुसकान' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। (उत्तर सीमा लगभग 50-60 शब्द) 3

16. (i) 'मंगलेश डबराल' अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के कृतित्व के बारे में लिखिए। 2
(उत्तर सीमा लगभग 40 शब्द)
(ii) 'यतीन्द्र मिश्र' अथवा 'भदंत आनंद कौसल्यायन' के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 2
(उत्तर सीमा लगभग 40 शब्द)

खण्ड-द

17. 'खेदुम' के एक किलोमीटर के एरिये के बारे में जितेन ने लेखिका को क्या बताया? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 4

अथवा

'एक अर्थ में मैं स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया।' लेखक को ऐसा कब अनुभव हुआ? ''मैं क्यों लिखता हूँ'' पाठ के आधार पर समझाइये। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 4

18. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए : 6

(1) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व
(i) प्रस्तावना
(ii) अनुशासन का अर्थ और आवश्यकता
(iii) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व
(iv) अनुशासन की उपयोगिता व लाभ
(v) उपसंहार

(2) स्वतंत्रता के 70 वर्ष - क्या खोया, क्या पाया ?
(i) प्रस्तावना
(ii) स्वतंत्रता का अर्थ
(iii) स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की स्थिति
(iv) विकास की ओर बढ़ते कदम तथा भविष्य
(v) उपसंहार

(3) सैनिक शिक्षा की आवश्यकता
(i) प्रस्तावना
(ii) सैनिक शिक्षा की अवधारणा और आवश्यकता
(iii) भारत में प्रमुख सैनिक शिक्षण संस्थाएँ
(iv) व्यक्तित्व विकास में सैनिक शिक्षा का महत्त्व
(v) उपसंहार

(4) यदि मैं प्रधानमंत्री होता
(i) प्रस्तावना
(ii) प्रधानमंत्री के पद का महत्त्व, दायित्व और अधिकार
(iii) मैं प्रधानमंत्री क्यों बनना चाहता हूँ
(iv) प्रधानमंत्री के रूप में भविष्य की योजनाएँ
(v) उपसंहार

19. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पटना का छात्र नरेन्द्र मानते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने हेतु एक प्रार्थना-पत्र लिखिए। 4

अथवा

स्वयं को लखनऊ निवासी वंदिता मानते हुये अपनी मित्र दिल्ली निवासी रानी को अवकाश में लखनऊ भ्रमण हेतु आमंत्रित करते हुए एक पत्र लिखिए। 4

20. स्वयं को मथुरा निवासी सुरेश मानते हुए अपनी पुरानी साइकिल की बिक्री हेतु एक विज्ञापन उचित प्रारूप में लिखिए। 4

अथवा

नगर निगम, हरिद्वार की ओर से जल संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु एक विज्ञापन उचित प्रारूप में लिखिए। 4

हिन्दी कक्षा X

क्षितिज भाग-2

काव्य-खण्ड

1. सूरदास

कवि-परिचय—भक्त प्रवर 'सूरदास' भक्तिकाल की सगुणधारा के कृष्ण भक्त कवि हैं। इनका जन्म सन् 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार उनका जन्म मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ, जबकि दूसरी मान्यता के अनुसार उनका जन्म-स्थान दिल्ली के पास 'सीही' गाँव में माना जाता है। उन्होंने सगुण उपासना का प्रतिपादन किया। इनकी तीन रचनाएँ मानी जाती हैं—'सूरसागर', 'साहित्य लहरी' और 'सूर-सारावली'। जिसमें 'सूरसागर' सर्वाधिक प्रसिद्ध है। 'सूरदास' का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। वे हिन्दी के रससिद्ध कवि हैं। उन्होंने कृष्ण को आराध्य मानकर उनकी बाल-लीलाओं, रूप-छवि, संयोग-वियोग, शृंगार तथा भक्ति से सम्बन्धित हजारों पदों की रचना की है। इनके 'भ्रमर गीत' में सगुण भक्ति का सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। पुष्टिमार्गीय अष्टछाप के कवियों में सूरदास की गणना सर्वप्रथम की जाती है। ये मथुरा में गऊघाट पर रहकर श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे। आपकी भक्ति सख्य भाव की है। (जिसमें भगवान के साथ भक्त का 'सखा भाव' रहता है।) आप वल्लभाचार्य के प्रमुख शिष्य थे। सन् 1583 में पारसौली में उनका देहान्त हो गया।

भाषा-शैली—मूलतः सूर वात्सल्य, शृंगार व भक्ति के श्रेष्ठ कवि माने गए हैं। आपकी कविता में ब्रजभाषा के परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप का प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। पदों में कोमलकांत मधुर पदावली, सरल पदविन्यास, मधुर भाव व्यंजना तथा गेयता का तत्त्व विद्यमान है। रस-अलंकारों का प्रयोग भाषा में विशिष्ट बोध कराने वाला है। मन की तरल भावानुभूतियों का मनमोहक और आकर्षक चित्र अन्यत्र दुर्लभ है।

पाठ-परिचय—पाठ में संकलित चारों पद 'भ्रमरगीत' से लिए गये हैं। जिसमें उद्धव-गोपी संवाद के माध्यम से ज्ञान-योग का खण्डन तथा प्रेम-भक्ति का समर्थन किया गया है। गोपियों ने भ्रमर के ब्याज से उद्धव को खरी-खोटी सुनाई, कृष्ण की भ्रमरवृत्ति पर आक्षेप किए हैं। यह उपालम्भ काव्य है जिसमें नायक की निष्ठुरता के साथ-साथ नायिका की मूक व्यथा, विरह वेदना का मार्मिक चित्रण भी मिलता है। पहले पद में गोपियाँ उद्धव को सौभाग्यशाली मानती हैं, क्योंकि वे कभी प्रेम के बंधन में नहीं बंधे और न उन्होंने प्रेम के वास्तविक अर्थ को जाना है। ये तो हमीं नासमझ हैं जो कृष्ण-प्रेम में ऐसे लिपट गईं जैसे गुड़ से चींटी लिपट जाती है। दूसरे पद में गोपियों की यह स्वीकारोक्ति कि उनके मन की आस मन में ही रह गयी, कृष्ण के प्रति उनके प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त करती है। तीसरे पद में गोपियाँ उद्धव की योग-साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर कृष्ण के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास व्यक्त करती हैं। चौथे पद में कटाक्ष करते हुए कहती हैं कि कृष्ण ने अब राजनीति सीख ली है। वे हमें योग-मार्ग अपनाने की बात कहकर हम पर अन्याय कर रहे हैं। उनका यह व्यवहार राजधर्म के विपरीत है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

पद

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न त्यागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥

[माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2024 (सं.)]

कठिन-शब्दार्थ–बड़भागी = भाग्यशाली। **अपरस** = अछूता, अलिप्त। **तगा** = धागा। **नाहिन** = नहीं। **अनुरागी** = प्रेम में डूबा। **पुरइनि पात** = कमल का पत्ता। **दागी** = दाग, धब्बा। **माहँ** = भीतर, में। **गागरि** = गगरी, कलशी। **ताकौ** = उसको। **प्रीति** = प्रेम। **पाउँ** = पैर। **बोर्‌यौ** = डुबोया। **परागी** = मोहित हुई। **अबला** = स्त्री, दुर्बल मन वाली। **भोरी** = भोली। **गुर** = गुड़। **पागी** = लिपटी हुई।

भावार्थ–गोपियाँ उद्धव की प्रेमहीनता पर व्यंग्य कर कहती हैं कि हे उद्धव! तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम कभी प्रेम के धागे से नहीं बँधे हो, अर्थात् प्रेम-बन्धन से सर्वथा मुक्त हो। तुम प्रेम-बंधन से उसी प्रकार सर्वथा मुक्त रहते हो, जिस प्रकार कमल का पत्ता जल में रहते हुए भी उसके स्पर्श से निर्लिप्त रहता है। अर्थात् उस पर जल की बूँद भी नहीं ठहर पाती। अथवा तेल की मटकी को जल के भीतर डुबाने पर भी उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती। इसी प्रकार तुम भी प्रेम-रूप कृष्ण के हमेशा पास रहते हुए भी उनके प्रेम-भाव से मुक्त ही रहे, और उसका तनिक भी आस्वाद नहीं पा सके। उनके प्रभाव से हमेशा मुक्त बने रहते हो।

गोपियाँ कहती हैं कि तुमने आज तक कभी भी प्रेम-नदी में अपना पैर तक नहीं डुबोया। अर्थात् कभी प्रेम के पास तक नहीं फटके और तुम्हारी दृष्टि किसी के रूप को देखकर उस पर मोहित नहीं हुई है। परन्तु हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं, जो अपने प्रियतम की रूप माधुरी पर उसी प्रकार आसक्त होकर उसके प्रेम में पग गई हैं, जैसे चींटी गुड़ पर आसक्त होकर उसके ऊपर चिपक जाती है और फिर उससे अलग नहीं हो पाती है और वहीं अपने प्राण दे देती है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

(क) गोपियों ने किसे बड़भागी कहा है?

(ख) उसे बड़भागी क्यों कहा गया है?

(ग) 'पुरइनि पात' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–(क) गोपियों ने उद्धव को बड़भागी कहा है।

उत्तर–(ख) गोपियाँ व्यंग्य में उद्धव को बड़भागी अर्थात् भाग्यशाली मानती हैं, क्योंकि वे कृष्ण के समीप रहकर भी प्रेम बंधन में नहीं बंधे और न ही उनकी विरह वेदना को कभी जाना।

उत्तर–(ग) 'पुरइनि पात' से अभिप्राय है—कमल का पत्ता।

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही॥

कठिन-शब्दार्थ–माँझ = मध्य, में। **अवधि** = समय। **अधार** = आधार, सहारा। **आस** = आशा। **आवन की** = आने की। **बिथा** = पीड़ा। **दही** = जलना। **गुहारि** = रक्षा के लिए पुकारना। **बही** = बहना। **धीर** = धैर्य। **धरहिं** = रखें, धारण करें। **मरजादा** = मर्यादा। **लही** = ग्रहण।

भावार्थ–सूरदास जी गोपियों की विरह व्यथा को व्यक्त करते हुए उनकी दयनीय दशा को बता रहे हैं। कृष्ण ने योग संदेश गोपियों को देने के लिए तथा उनका प्रेम भूलने के लिए उद्धव को भेजा था। जहाँ उद्धव को गोपियाँ कहती हैं कि हमारे मन की बातें हमारे मन में ही रह गई क्योंकि हम कृष्ण को अपने हृदय का प्रेम व्यक्त कर पातीं उससे पहले ही वे हमें छोड़कर चले गए। इसलिए हे उद्धव! अब हम अपनी बातें किससे और कैसे जाकर कहें? अब तक तो हमें कृष्ण के आने की आशा थी इसलिए उनके प्रेम से प्राप्त तन-मन की पीड़ा को सहन कर रही थीं। लेकिन अब इस योग-संदेश को सुन-सुन हमें हमारा विरह और भी जलाने लगा है। अर्थात् प्रेम में डूबी गोपियों को जब योग धारण करने का संदेश प्राप्त होता है तो वे और अधिक विरह में जलने लगती हैं। गोपियाँ आगे कहती हैं कि हम अगर चाहतीं तो आवाज